PAPER – I
PHILOSOPHY (HONOURS)
E. STUDY MATERIAL
FOR B.A. PART I

भाग 1

BY – DR. RAKESH KUMAR SINGH
G.D. COLLEGE, BAGAHA
Mob. 9576936617

वैशेषिक दर्शन में पदार्थ के रूप में द्रव्य विचार :–

वैशेषिक दर्शन में पदार्थों की मीमांसा की गई है। पदार्थ शब्द दो शब्दों के मेल से बना है वे दो शब्द है 'पद' और 'अर्थ'। अर्थात् जिस पद का कुछ अर्थ होता है उसे पदार्थ की संज्ञा दी जाती है। पदार्थ के अन्दर ही वैशेषिक ने विश्व की वास्तविक वस्तुओं की चर्चा की गई है। वैशेषिक दर्शन में पदार्थ का विभाजन दो वर्गों किया गया है – (1) भाव पदार्थ (2) अभाव पदार्थ। भाव पदार्थों की संख्या 6: बतायी गयी है। जिसमें द्रव्य प्रथम पदार्थ है।

द्रव्य :– वैशेषिक सूत्र में द्रव्य की परिभाषा इन शब्दों में दी गई है– "क्रिया – गुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम्।" अर्थात् द्रव्य, गुण और कर्म का अधिष्ठान है और अपने कार्यों का उपादान कारण है। वैशेषिक दर्शन में द्रव्य को एक विशेष अर्थ में लिया गया है। द्रव्य वह है जो गुण और कर्म को धारण करता है। गुण और कर्म बिना किसी वस्तु या आधार के नहीं रह सकते। इसका आधार ही द्रव्य कहलाता है। पाश्चात्य विचारक लॉक ने भी द्रव्य को गुणों का आधार बतलाया है।

गुण और कर्म द्रव्य में रहते हुए भी द्रव्य से भिन्न है। द्रव्य गुणयुक्त है किन्तु गुण और कर्म गुणरहित है। गुण सभी द्रव्यों में पाये जाते हैं किन्तु कर्म सभी द्रव्यों में नहीं रहते। कर्म के लिए स्थान की आवश्यकता पड़ती है। ससीम द्रव्य ही स्थान घेरते हैं। इसलिए ये कर्मयुक्त है। असीम द्रव्य दिक् में नहीं है। इसलिए इन्हें गति या कर्म के लिए स्थान नहीं मिलता। अतः असीम द्रव्यों में कर्म नहीं पाया जाता। जबकि ससीम द्रव्यों में गुण और कर्म दोनों है।

वैशेषिक दर्शन में नौ प्रकार के द्रव्यों की चर्चा की गई है। (1) आत्मा (2) अग्नि (3) वायु (4) आकाश (5) जल (6) पृथ्वी (7) दिक् (8) काल (9) और (9) मन।

भाग - 2

इन द्रव्यों में से प्रथम पाँच पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश को पंचभूत कहा जाता है। वैशेषिक दर्शन इसी पंचभूत से विश्व का निर्माण मानता है। वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक कणाद द्रव्यों का वर्गीकरण ज्ञानात्मक आधार पर करते हैं। इनके अनुसार प्रत्येक पंचभूत का एक-एक विशिष्ट गुण होता है। पृथ्वी का विशेष गुण गन्ध है, जल का विशेष गुण रस है, वायु का स्पर्श अग्नि का रूप तथा आकाश का विशेष गुण शब्द है। वैशेषिक का मानना है कि हमें पाँच इन्द्रियाँ हैं जिनके द्वारा बाह्य जगत का ज्ञान होता है। प्रत्येक इन्द्रिय से वस्तु के किसी खास गुण का ज्ञान होता है। ये गुण किसी द्रव्य में ही रह सकते हैं। इसलिए पाँच विभिन्न गुणों के आधार के रूप में पाँच द्रव्यों को यहाँ स्वीकार किया गया है।

आँख से बाह्य जगत के रंग का ज्ञान होता है। रंग गुण को धारण करनेवाला द्रव्य तेज है। कान से सुनने या आवाज गुण का ज्ञान होता है इस गुण को धारण करनेवाला द्रव्य आकाश है, त्वचा से स्पर्श का काम लिया जाता है इस गुण को धारण करने वाला वायु द्रव्य माना गया है। नाक से गन्ध गुण का पता चलता है गन्ध को धारण करने वाला द्रव्य पृथ्वी है, जिह्वा से स्वाद जैसे खट्टापन, मीठापन आदि का बोध होता है स्वाद गुण धारण करने वाला द्रव्य जल है।

वैशेषिक के अनुसार उपर्युक्त पंचभूतों में आकाश के सिवा अन्य चारों द्रव्यों के परमाणु होते हैं। किसी वस्तु के सबसे छोटे टुकड़े या जिसका विभाग संभव न हो उसे परमाणु कहते हैं। ये सरल, नित्य, एवं अविनाशी होते हैं। वैशेषिक द्रव्यों को नाश्वर मानता है किन्तु इनके परमाणु अनश्वर हैं। इन्हीं परमाणुओं से विश्व के सभी पदार्थ बनते हैं। इनका ज्ञान प्रत्यक्ष से नहीं बल्कि